



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रंथालय

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M 2167 विषय कर्मकांड

नांव सभादीप प्रयोग MS

लेखक / लिपीकार —

पृष्ठ 01 काळ — पूर्ण / अपूर्ण

Checked 2012

श्रीगणेशाय नमः॥ हरिः ओम् ॥ ॥ अथ सभा दीप प्रयोगः ॥ देशका
 लौ संकीर्त्य ॥ मम इह जन्म निज जन्म जन्मांतरे च दीर्घायु पुत्र सौभा
 ग्य अवेध व्याधिकृत्योक्त फलावाप्तिका मोहं ब्रह्माविस्तुरुद्रप्रीत्य
 र्थं ॥ अमुकं देवा लये ब्राह्मण सभाया सभा दीपदानमहं करिष्ये ॥
 गणपति पूजनं पुण्याहवाचनं ब्राह्मण पूजनं दीप पूजनं च करिष्ये ॥
 सो दीप ब्रह्म रूपस्त्वज्यातिषां प्रभुरव्ययं ॥ आरोग्यं देहि पुत्रांश्च अ
 वेध व्यप्रयच्छ मे ॥ श्रावणे मास्य पाकर्म न्यय्यारब्धे विप्रसंनिधौ ॥
 श्रीहितुंड लपिष्टस्य किंचित्सं च कनिर्मितं ॥ घृतवर्तिसमायुक्तं विम
 वेको स्ये भाजने ॥ सपादतंडुलप्रस्थं पूरिते संप्रतिष्ठितं ॥ अवेधवा
 सो पुत्रस्त्वदीर्घायु श्रीसुखाप्तये ॥ सभा दीप प्रदास्ये हंतुभ्यां वि

स. भा.

॥३॥

प्रसदक्षिणां॥समाप्तिप्रदाः संतु भवेस्मिन्वाश्रवांतरे॥ सर्वकाम
प्रदानृष्णादीपदानप्रतेषितः॥ श्रावण्याश्रवणार्थ्य च सभाया
मग्निसंनिधौ॥ सभादीपंप्रदास्यामि सुखसंतानहेतवे॥ देवस्य
त्वासवितुः प्रसेवेष्विनोर्बाहुभ्यां पूछो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि॥॥
अनेन सभादीपदानेन सदक्षिणाकेन सतांबूलेन अमुकशर्मणे
ब्राह्मणाय तनुष्यमहं संप्रददे॥ प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्णामि॥ अने
न सभादीपदानेन ब्रह्मण विष्णुरुदः प्रीयतां॥ नममा॥ इति सभा
दीपप्रयोगः समाप्तः॥ धृ॥ ॥ धृ॥ ॥ धृ॥ ॥ धृ॥ श्रीः ॥३॥
नारायण भट गोस्वले

[OrderDescription]
,CREATED=23.09.19 14:12
,TRANSFERRED=2019/09/23 at 14:14:17
,PAGES=3
,TYPE=STD
,NAME=S0001901
,Book Name=M-2167-SABHADIP PRAYOG
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,